© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 08 | October – December 2017

वश्वीकरण के पर्यावरण पर प्रभावः एक मूल्यांकन

Sachin
Assistant Professor
G.D. College, Gurugram

Pradeep Kumar
Student (M.Com.)
Govt. P.G. College, Jind

सारांशः–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत, पूंजी और वस्तुओं का एक देश से दूसरे देश को मुक्त प्रवाह होता है। वैश्वीकरण में पूँजी का प्रवाह, सूचनाओं का आदान-प्रदान, तकनीकी का विकास, योग्य लोगों को जहाँ अवसर प्राप्त हो रहे हैं तो वही तीव्र औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। जिससे प्राकृतिक आपदाएं एवं मानव निर्मित आपदाएं आ रही है। वैश्वीकरण के नाम पर प्रतिकूल जैव प्रोद्योगिकी की घुसपैठ चिन्ता का विषय बन गया है।

ISSN 2454-308X

मुख्य शब्दः– वैश्वीकरण, पर्यावरण, संयोजन, प्रभाव, प्रदूषण।

परिचयः– वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है।[1] वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत, पूंजी और वस्तुओं का एक देश से दूसरे देश को मुक्त प्रवाह होता है। एक देश के व्यापारी दूसरे देश के निर्माण, सेवा, ज्ञान तथा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में मुक्त रूप से पूँजी निवेश करते है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कुकुरमत्तो की तरह उग रही हैं तथा अल्प विकसित देशों क देशी निर्माण क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमा रही हैं।[2]

परिर्वतन प्रकृति का सार्वभौमिक नियम है। परिवर्तन के अभाव में महापरिर्वतन (विनाश) प्रारंभ हो जाता है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में लिखा है–

''पुरातना का यह निर्मोक,
सहन करती न प्रकृति पल एक।
नित्य नूतनता का संचार,
किए है परिवर्तन में टेक।।''

समय अबाध गति से चलता रहता है। उसके प्रवाह में जहां एक दिशा में बहुत कुछ बहता जाता है। वहीं दूसरी दिशा में बहुत कुछ आ जाता है। सामाजिक सोच के अनुरूप विकास का पथ प्रशस्त होता है। आज वैश्वीकरण का स्लोगन तेजी से चल पड़ा है। ऐसा लगता है, कोई नयी तकनीक आ गयी है जिससे समूची दुनिया को हथेली पर रखकर उलट-पुलट कर देख सकते हैं। किन्तु क्या शब्दाडम्बर मात्र से सम्पूर्ण विश्व को एक लय में बांधा जा सकता है? भारत जैसे देश में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा अति प्राचीन है। हम सम्पूर्ण जगत को एक ईश्वर की सन्ताने मानकर उससे बन्धुत्व भाव रखते हैं। आज जिस परिप्रेक्ष्य मं भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग किया जा रहा है वह सर्वथा नवीन अर्थ का घोतक है। सम्पूर्ण विश्व को तकनीकी विकास के स्तर पर एकीकृत करने का भाव वैश्वीकरण है।[3] वैश्वीकरण प्रक्रिया है जिसके द्वारा सभी लोगों और समुदायों के लिए एक तेजी से आम आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का अनुभव करने के लिए